ISSN:……………..(Online) | Volume -1| Issue- 1| January-February 2025|pp.10-18
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E Research Journal

अंतर्राष्ट्रीय संबंधो के प्रतिमानों में नेताजी सुभाष चंद्र बोस और नरेंद्र मोदी का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ निकिता राज, अतिथि शिक्षिका
राज नारायण महाविद्यालय, हाजीपुर
ई-मेल- mailnikitasingh10@gmail.com

शोध-सार

यह लेख नेताजी सुभाष चंद्र बोस और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विदेश नीतियों के तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। इसमें सुभाष चंद्र बोस के अंतरराष्ट्रीय संबंधों और नरेंद्र मोदी की मौजूदा विदेश नीति में समानताएं खोजी गई हैं। शोध-पत्र में दोनों नेताओं की नीतियों और विचारधाराओं की तुलनात्मक समीक्षा करते हुए इस बात पर ध्यान दिया गया है कि दोनों ने किस प्रकार अपने देश की अखंडता और संप्रभुता को बनाए रखा। इसके अलावा, साहित्य समीक्षा और तुलनात्मक दृष्टिकोण द्वारा उनके अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

शब्द-कुंजी- सुभाष चंद्र बोस, नरेंद्र मोदी, विदेश नीति, अंतरराष्ट्रीय संबंध, तुलनात्मक अध्ययन, अखंडता, संप्रभुता।

परिचय

इतिहास के वे शख्सियत जिनके बारे में अक्सर अधूरी बात ही की जाती है। जिनके "जय हिंद" के नारे आज भी हर किसी की जुबां पर है और जिन्होंने देश की आजादी के लिए अंग्रेजों से लोहा लेने वाली आजाद हिंद फौज की कमान संभाली। ऐसे महान नायक है हमारे देश के महान क्रांतिकारियों में सबसे अग्रणी सुभाष चंद्र बोस। वे गुलाम भारत के एक ऐसे शख्सियत थे जिन्होंने ना केवल देश के अंदर बल्कि देश के बाहर भी आजादी की लड़ाई लड़ी। राष्ट्रीय आंदोलन में नेताजी का योगदान कलम चलाने से लेकर आजाद हिंद फौज का नेतृत्व कर अंग्रेजों से लोहा लेने तक का रहा है। अंतरराष्ट्रीय संबंधों के परिपेक्ष्य में देखा जाए तो नेता जी ने ब्रिटिश हुकूमत का सफाया करने के लिए जर्मनी, इटली, जापान, सिंगापुर आदि देशों से भारत की स्वतंत्रता के लिए हर संभव सहायता प्राप्त करने की कोशिश की जिसमें वो काफी हद तक सफल भी हुए। इस शोध पत्र को लेकर मेरे जो उद्देश्य प्रश्न रहे है वे है-

वर्तमान शोध-पत्र अध्ययन, तुलनात्मक विश्लेषण पर विशेष रूप से केंद्रित है एवं इन उद्देश्यों के साथ आगे बढ़ने की कोशिश करता है कि किस प्रकार नेताजी सुभाष चंद्र बोस के अंतरराष्ट्रीय संबंधों की नीति तथा वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विदेश नीति में समरसता देखी जा सकती है। साथ ही, किस प्रकार दोनों ने ही अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर विशेष बल देते हुए अपने देश की अखंडता एवं समप्रभुता को कायम रखने की कोशिश की है। इसके अलावा, वैदेशिक संबंधों पर दोनो की विचारधाराओं का अध्ययन किया जाता है कि किन विचारधाराओं से प्रेरित होकर सुभाष चंद्र बोस ने अपने अंतर्राष्ट्रीय संबंधो को स्थापित किया है एवं वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी किस प्रकार की विचारधारा को अपनाए हुए है तथा क्या इनकी विचारधाराएँ नेताजी की विचारधाराओं से मेल खाती है। इस शोधपत्र में इन

ISSN:................(Online) | Volume -1| Issue- 1| January-February 2025|pp.10-18
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E Research Journal

सभी परिपेक्ष्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाता है।

साहित्य समीक्षा और कार्यप्रणाली

यह शोध पत्र वर्तमान संदर्भ में सुभाष चंद्र बोस और नरेंद्र मोदी के बीच विभिन्न पहलुओं का तुलनात्मक तरीकों से समीक्षा करता है एवं इस तरह से आगे बढ़ता है कि शोध-पत्र विश्लेषण के व्यापक तरीकों के संदर्भ में होगा जो पिछले शोध को संश्लेषित करता है। इसमें मेरे अपने शोध अनुभव के आधार पर इस पद्धति द्वारा और अधिक विस्तृत रूप से अध्ययन किया जाता है तथा उपर्युक्त प्रश्नों की प्रासंगिकता के लिए निष्कर्ष निकाला जाता है। इसमें शोध प्रश्नों की पुष्टि के लिए विश्लेषणात्मक अध्ययन करते हुए वर्णनात्मक और तुलनात्मक दृष्टिकोणों द्वारा निष्कर्ष निकाला जाता है। इसके लिए शोध पत्र की संरचना इस प्रकार की जाती है कि इसमें सबसे पहले सुभाष चंद्र बोस तथा नरेंद्र मोदी का एक संक्षिप्त विवरण देते हुए अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर दोनों के विचार एवं नीतियों का तुलनात्मक विश्लेषण किया जाएगा तथा शोध के मूल प्रश्नों पर विस्तार से व्याख्या किया जाएगा। इसका भी विवरण शोध पत्र में किया जाएगा कि भविष्य में इसकी क्या संभावनाएं होंगी तथा किस प्रकार यह आगे किए जाने वाले शोध के लिए प्रासांगिक होगा। इन सभी प्रश्नों के उत्तर की जांच करने के लिए विभिन्न श्रोतों द्वारा साहित्य समीक्षा की गई है। वैसे तो सुभाष चंद्र बोस और नरेंद्र मोदी के अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण की चर्चाएँ कई अध्ययनों में व्यक्तिगत रूप से की गई है, जिनमें इनकी नीतियों और विचारधाराओं का उल्लेख किया गया है। परंतु अभी तक ऐसा कोई भी अध्ययन नही किया गया है, जिसमें दोनों के अंतरराष्ट्रीय संबंधों का तुलनात्मक विश्लेषण हो। उपर्युक्त सभी प्रश्नों की जांच के लिए दोनो का व्यक्तिगत रूप से संक्षिप्त विवरण देने के बाद इनका तुलनात्मक विश्लेषण आवश्यक है।

सुभाष चंद्र बोस का जीवन परिचय एवं अंतरराष्ट्रीय संबंधों में उनकी भूमिका

भारत की आजादी के 75 साल आज हम उत्सव के रूप में मना रहे हैं। इस बेशकीमती आजादी को पाने में लाखों सेनानियों को प्रेरित किया, नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने। हर भारतीय के दिल में नेताजी ने ऐसी आवाज प्रज्वलित की, जिसने न केवल भारत को स्वतंत्र किया बल्कि ब्रिटिश साम्राज्य की नींव को ध्वस्त कर दिया। साथ ही आजाद हिंद फौज को दुनिया के सबसे शक्तिशाली फौज से लड़ने का साहस दिया। उन्होंने भारत की पहली अंतरिम सरकार की स्थापना की एवं 21 अक्टूबर 1943 को पहली बार भारत की धरती पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। ऐसे महान शख्सियत का जन्म 23 जनवरी 1897 को कटक के प्रसिद्ध वकील जानकीनाथ बोस तथा प्रभावती देवी के यहां हुआ। देश को "जय हिंद", "स्वतंत्रता दी नहीं जाती, ली जाती है" और "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा" का नारा देने वाले सुभाष चंद्र बोस के पिता जानकीनाथ बोस कटक शहर के मशहूर वकील थे। चौदह भाई-बहनों में सुभाष अपने माता-पिता की नौवीं संतान और पांचवें बेटे थे। अपने सभी भाइयों में सुभाष को सबसे ज्यादा लगाव शरतचंद्र से था। संपन्न बंगाली परिवार में जन्मे नेता जी की प्रारंभिक पढ़ाई कटक की रेवेनशा कॉलेजियेट स्कूल में हुई। तत्पश्चात, उनकी शिक्षा कोलकाता के प्रेसिडेंसी कॉलेज और स्कॉटिस चर्च कॉलेज में हुई।

देशभक्ति की भावना का उदाहरण तो उनके शुरुआती जीवन में ही देखने को मिलता है, जब उन्होंने अपने शिक्षक के भारतीय विरोधी बयान पर घोर आपत्ति जताई थी। तभी सब को अंदाजा लग गया था कि वे गुलामी के आगे सिर झुकाने वालों में से नहीं है। नेताजी

ISSN:……………..(Online) | Volume -1| Issue- 1| January-February 2025|pp.10-18
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E Research Journal

कॉलेज के शुरुआती दिनों में ही बंगाल में क्रांति की वह आवाज थे जिसने राष्ट्रीय आंदोलन को एक नई दिशा दी। वे शुरू से ही स्वामी विवेकानंद के आदर्शों से प्रेरित रहे, इस कारण समाज के प्रति उनकी सोच मानवतावादी और सुधारवादी बनती गई। 1919 में स्नातक के बाद भारतीय प्रशासनिक सेवा की तैयारी के लिए उनके माता-पिता ने उन्हे इंग्लैंड के कैंब्रिज विश्वविद्यालय भेज दिया। चूकि अंग्रेजी शासन के जमाने में भारतीयों के लिए सिविल सर्विस में जाना बहुत कठिन था, फिर भी उन्होंने न केवल सिविल सर्विसेज की परीक्षा पास की बल्कि चौथे स्थान प्राप्त किए। लेकिन उन्मुक्त विचारों के सुभाष और भारत मां के इस लाल का मन अंग्रेजों की नौकरी में कहां लगने वाला था। उन्हें जलियांवाला बाग कांड ने इस कदर विचलित कर दिया कि वे नौकरी से इस्तीफा देकर आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। लंदन से भारत लौटने के बाद नेताजी की मुलाकात देशबंधु चितरंजन दास से हुई जिन्होंने उन दिनों फॉरवर्ड नाम से एक अंग्रेजी अखबार शुरू कर अंग्रेजों के जुल्मों सितम के खिलाफ मुहिम छेड़ रखी थी। बोस से मिलने के बाद चितरंजन दास ने उन्हें फॉरवर्ड अखबार का संपादक बना दिया। नेताजी उस अखबार में ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ जोर-शोर से लिखकर अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ माहौल तैयार कर रहे थे। कलम से शुरू की गई इस मुहिम की वजह से उन्हें साल 1921 में छह महीने की जेल भी हुई। उन्होंने हमेशा यही कहा कि "दुनिया में सबसे बड़ा अपराध अन्याय सहना और गलत के साथ समझौता करना है।" नेताजी ने राष्ट्रवाद को मानव जाति के उच्चतम आदर्शों 'सत्यम शिवम सुंदरम' से प्रेरित बताया। उनके मन में पहले से ही एक मजबूत और निडर व्यक्तित्व था। वे राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और अत्यधिक दासता से भारत का उद्धार चाहते थे।

अपने राजनीतिक सफर में कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव रहने के बाद 1938 के हरिपुरा अधिवेशन में नेताजी को कांग्रेस का राष्ट्रीय अध्यक्ष चुना गया। उन्होंने कहा कि "मेरी यह कामना है कि महात्मा गांधी के नेतृत्व में ही हमें स्वाधीनता की लड़ाई लड़नी है क्योंकि हमारी लड़ाई केवल ब्रिटिश साम्राज्यवाद से नहीं, विश्व साम्राज्यवाद से है।"[1] उनके नेतृत्व में एक जादुई प्रभाव था, जिस कारण उनकी एक आवाज पर पूरा देश जान न्योछावर करने को तैयार हो जाता था। लेकिन नेताजी के क्रांतिकारी विचारों और आकर्षक व्यक्तित्व से अपने ही वरिष्ठ नेता बोस की निंदा करने लगे। विचारों में मतभेद और बोस की लोकप्रियता पार्टी के कई नेताओं को नही भा रही थी, इसे भापते हुए नेताजी ने "फॉरवार्ड ब्लॉक" नाम से अपनी अलग पार्टी बनाई। इसके साथ ही कांग्रेस से उनका मोह भंग होने लगा। वर्ष 1939 को त्रिपुरी अधिवेशन में उन्होंने गांधी जी के उम्मीदवार पट्टाभि सीतारमैय्या के खिलाफ फिर से अध्यक्ष पद का चुनाव जीता, परंतु गांधी जी के साथ वैचारिक मतभेद के कारण नेताजी ने कांग्रेस के अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया। इसी बीच द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ गया। बोस को लगा कि अगर ब्रिटेन के दुश्मनों से मिला जाए तो उनके साथ मिलकर अंग्रेजी हुकूमत से आजादी हासिल की जा सकती है। हालांकि उनके विचारो पर अंग्रेजी हुकूमत को शक था क्योंकि नेता जी ना सिर्फ एक क्रांतिकारी थे, बल्कि वे अंग्रेजों को उन्हीं के खेल में मात देना भी जानते थे। इसी से डरकर जुलाई 1940 में नेताजी को कलकत्ता की जेल में बंद कर दिया गया। तत्पश्चात उनकी बिगड़ती सेहत को देखते हुए ब्रिटिश सरकार द्वारा उन्हें उनके आवास पर ही नजरबंद कर दिया गया। कुछ दिन बाद बोस वहां से भागने में कामयाब हुए, वे भेष बदलकर कलकता से काबुल गए और फिर वहां से सोवियत संघ के रास्ते जर्मनी पहुंचे एवं आजादी की लड़ाई को एक नई दिशा और ऊर्जा दी। यहीं से अंतरराष्ट्रीय संबंधों में उनकी भूमिका एवं योगदान की शुरुआत होती है।

जिस वक्त नेताजी यूरोप यात्रा पर निकले, उस वक्त यूरोप में हिटलर के नाजीवाद और मुसोलिनी के फासीवाद का दौर था एवं दोनों का निशाना इंग्लैंड था। इसलिए बोस को दुश्मन का दुश्मन भविष्य का दोस्त

ISSN:................(Online) | Volume -1| Issue- 1| January-February 2025|pp.10-18
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E Research Journal

नजर आ रहा था। हालांकि 1933 में जब सुभाष चंद्र बोस जर्मनी में थे तब हिटलर ने उनसे मिलने से भी इनकार कर दिया था, परंतु 1940 की शुरुआत में स्थिति बदल चुकी थी। जर्मनी विश्वयुद्ध जीतने की संभावनाओं को बढ़ाने के लिए अंग्रेजों को हराना चाहता था। हिटलर जानता था कि यदि युद्ध के दौरान भारतीय अंग्रेजों का समर्थन करते हैं, तो ब्रिटिश सेना को मजबूती मिल जाएगी एवं इससे जर्मनी के जीतने की संभावना कम हो जाएगी, इसलिए उसने 1940 की शुरुआत में बोस से मिलने की इच्छा जताई। हिटलर से मिलने के बाद बोस ने उनसे अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए भारतीयों के साथ गठबंधन बनाने पर चर्चा की, परंतु हिटलर ने इसमें कोई खास दिलचस्पी नहीं ली। बोस यह जानते थे कि हिटलर भारत को आजाद करने के लिए कोई सैन्य सहायता नहीं देगा, इसलिए उन्होंने नॉर्थ अफ्रीका में गिरफ्तार किए गए भारतीय कैदियों की रिहाई की मांग की। पहले तो हिटलर इस बात से सहमत नहीं था, लेकिन बोस के बहुत प्रयासों के बाद वह कैदियों को रिहा करने के लिए तैयार हो गया। तत्पश्चात उन्होंने ब्रिटिश शासन से लड़ने और भारत को आजाद कराने के लिए जर्मनी में 1000 से अधिक लोगों की एक सेना तैयार की। किन्तु जब जर्मनी ने उन्हें रूस के विरुद्ध प्रयुक्त करने का प्रयास किया, तब उनके सामने कठिनाई उत्पन्न हो गई। उन्हें पता लग गया था कि हिटलर और जर्मनी से उन्हें कुछ और नहीं मिलने वाला है, इसलिये मार्च 1943 को वे जर्मनी से पूर्वी एशिया की ओर निकल गये।

नेताजी जर्मनी से जापानी नियंत्रण वाले सिंगापुर पहुँचे एवं यहाँ से आजाद हिंद फौज का दूसरा चरण प्रारंभ हुआ एवं यहीं विदेश की धरती से सुभाष चंद्र बोस ने भारत की स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण मोड़ उपस्थित किया। सिंगापुर पहुँचकर वे सर्वप्रथम वयोवृद्ध क्रान्तिकारी रासबिहारी बोस से मिले, जिनके द्वारा 'आज़ाद हिन्द फौज' का गठन पहली बार हुआ था। मूल रूप से उस वक्त यह आजाद हिन्द सरकार की सेना थी, जिसका लक्ष्य अंग्रेजों से लड़कर भारत को स्वतंत्रता दिलाना था। नेताजी ने जून 1943 में टोकियो रेडियो से घोषणा की कि "अंग्रेजों से यह आशा करना बिल्कुल व्यर्थ है कि वे स्वयं अपना साम्राज्य छोड़ देंगे, हमें भारत के भीतर व बाहर से स्वतंत्रता के लिये स्वयं संघर्ष करना होगा।"[2] इससे प्रफुल्लित होकर रासबिहारी बोस ने स्वेच्छा से 4 जुलाई 1943 को सिंगापुर के एडवर्ड पार्क में आजाद हिन्द फौज का नेतृत्व नेताजी को सौंप दिया। 5 जुलाई 1943 को सिंगापुर के टाउन हॉल के सामने नेताजी ने सुप्रीम कमांडर के रूप में सेना को संबोधित करते हुए "जय हिन्द" का अमर नारा दिया और 21 अक्टूबर 1943 को आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च सेनापति की हैसियत से सिंगापुर में स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार 'आज़ाद हिन्द सरकार' की स्थापना की। अपने इस सरकार के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा सेनाध्यक्ष तीनों का पद नेताजी ने अकेले संभाला। साथ ही अन्य जिम्मेदारियां जैसे वित्त विभाग एस.सी चटर्जी, प्रचार विभाग एस.ए. अय्यर एवं महिला संगठन लक्ष्मी स्वामीनाथन को सौंपा गया।

नेताजी ने आजाद हिंद फौज में महिला संगठन की स्थापना की, इस कारण महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए वे अग्रणी माने जाते हैं। उनके द्वारा आजाद हिंद फौज के लिए जो महिला संगठन बनाया गया, उसका नाम "रानी झांसी रेजिमेंट" था। यह 1943 में दक्षिण पूर्व एशिया में जापानी सहायता से कैप्टन लक्ष्मी स्वामीनाथन के नेतृत्व में बनाई गई सशस्त्र बल थी एवं भारतीय राष्ट्रीय सेना की एकमात्र महिला रेजिमेंट थी। नेताजी के इस सरकार को जर्मनी, जापान, फिलीपीन्स, कोरिया, चीन, इटली, मान्चुको और आयरलैंड सहित 11 देशों ने मान्यता दे दी थी। इतना ही नहीं नेताजी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर जापान ने अंडमान व निकोबार द्वीप इस अस्थायी सरकार को दे दिये। तत्पश्चात उन्होंने उन द्वीपों का नया नामकरण किया, अंडमान का नया नाम 'शहीद द्वीप' तथा निकोबार का 'स्वराज्य द्वीप' रखा एवं 30 दिसम्बर 1943 को इन द्वीपों पर स्वतन्त्र भारत का ध्वज भी फहरा दिया गया।

मार्च 1944 को “दिल्ली चलो” के नारे के साथ आज़ाद हिंद फौज का हिन्दुस्तान की धरती पर आगमन हुआ। आगे चलकर आजाद हिन्द फौज ने अंग्रेजों पर आक्रमण कर कुछ भारतीय प्रदेशों को अंग्रेजों से मुक्त करा लिया। जापानी सेना के साथ मिलकर आज़ाद हिन्द फौज बर्मा सहित रंगून से होती हुई 18 मार्च 1944 को कोहिमा और इम्फ़ाल के भारतीय मैदानी क्षेत्रों में पहुँच गई और ब्रिटिश सेना से जमकर मोर्चा लिया और यही एक महत्वपूर्ण मोड़ सिद्ध हुआ। एक तरफ समुद्री क्षेत्र में अंडमान-निकोबार द्वीप आजाद हिंद फौज को मिल जाना वहीं दूसरी तरफ भारत के कुछ पूर्वोत्तर हिस्से जैसे मणिपुर एवं अन्य कुछ हिस्से कब्जे में ले लेना आजाद हिंद फौज की सफलता थी।

6 जुलाई 1944 को नेताजी ने रंगून रेडियो स्टेशन से महात्मा गांधी के नाम जारी एक प्रसारण में अपनी स्थिति स्पष्ट की और आज़ाद हिन्द फौज द्वारा लड़ी जा रही इस निर्णायक लड़ाई की जीत के लिये उनकी शुभकामनाएँ माँगीं जिसमें उन्होंने कहा कि- “मैं जानता हूँ कि ब्रिटिश सरकार भारत की स्वाधीनता की माँग कभी स्वीकार नहीं करेगी। मैं इस बात का कायल हो चुका हूँ कि यदि हमें आज़ादी चाहिये तो हमें खून के दरिया से गुजरने को तैयार रहना चाहिये। अगर मुझे उम्मीद होती कि आज़ादी पाने का एक और सुनहरा मौका अपनी जिन्दगी में हमें मिलेगा तो मैं शायद घर छोड़ता ही नहीं, मैंने जो कुछ किया है अपने देश के लिये किया है। विश्व में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ाने और भारत की स्वाधीनता के लक्ष्य के निकट पहुँचने के लिये किया है। भारत की स्वाधीनता की आखिरी लड़ाई शुरू हो चुकी है, आज़ाद हिन्द फौज के सैनिक भारत की भूमि पर सफलतापूर्वक लड़ रहे हैं। हे राष्ट्रपिता! भारत की स्वाधीनता के इस पावन युद्ध में हम आपका आशीर्वाद और शुभकामनायें चाहते हैं।“[3] इसी दौरान बोस द्वारा ही सबसे पहले गांधी जी के लिए ‘राष्ट्रपिता’ शब्द का प्रयोग किया गया था। 22 सितम्बर 1944 को ‘शहीदी दिवस' मनाते हुये सुभाषचन्द्र बोस ने अपने सैनिकों से मार्मिक शब्दों में कहा– “हमारी मातृभूमि स्वतन्त्रता की खोज में है। तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा। यह स्वतन्त्रता की देवी की माँग है।“[4] आज़ाद हिन्द फ़ौज के सभी ब्रिगेडों ने जापानियों के साथ मिलकर भारत की पूर्वी सीमा एवं बर्मा से युद्ध लड़ा किन्तु दुर्भाग्यवश द्वितीय विश्व युद्ध का पासा पलट गया। जर्मनी ने हार मान ली और जापान को भी घुटने टेकने पड़े। जापान की हार के बाद, नेताजी को नया रास्ता ढूँढना जरूरी था, इसलिए उन्होने रूस से सहायता माँगने का निश्चय किया, परंतु वक्त को कुछ और ही मंजूर था। कहा जाता है कि 18 अगस्त 1945 को रूस जाते समय फोर्मोसा (वर्तमान ताइवान) में उनका विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। स्वतंत्र भारत की अमरता का जयघोष करने वाले सुभाषचंद्र बोस राष्ट्रप्रेम के दिव्य-ज्योति जलाकर अमर हो गये, लेकिन उनकी राजनीतिक विरासत पर मौत के रहस्य का पर्दा आज भी बना हुआ है।

भले ही ना आज नेताजी है ना उनकी आजाद हिंद सेना। परंतु आजादी की लड़ाई में नेताजी न होते तो आज यह आजाद हिंदुस्तान नहीं होता। निस्सन्देह सुभाष उग्र राष्ट्रवादी थे, उनके मन में फासीवाद के अधिनायकों के सबल तरीकों के प्रति भावनात्मक झुकाव था और वे भारत को शीघ्रातिशीघ्र स्वतन्त्रता दिलाने हेतु हिंसात्मक उपायों में आस्था भी रखते थे, इसलिए उन्होंने भारत माँ को जंजीर की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए विदेशी सहायता द्वारा आजाद हिंद फौज का गठन किया था। अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर उनके अलावा किसी और ने न तो इससे पहले इस तरह की नीतियाँ बनाई एवं न ही इन नीतियों का अनुसरण किया। अपने राष्ट्रहित में उन्होंने जिन नीतियों का अनुसरण कर विभिन्न देशों से सहायता प्राप्त की एवं आजाद हिंद सरकार का गठन किया वह काफी प्रशंसनीय हैं, उनके इस योगदान को देश कभी नही भूल पाएगा। नेताजी की उग्र राष्ट्रवादी राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय नीतियों को जानने के बाद वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नीतियों का भी अध्ययन

ISSN:……………..(Online) | Volume -1| Issue- 1| January-February 2025|pp.10-18
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E Research Journal

आवश्यक हो जाता है जिससे दोनों का तुलनात्मक विश्लेषण किया जा सके।

नरेंद्र मोदी का जीवन परिचय एवं अंतरराष्ट्रीय संबंधों में उनकी भूमिका

भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का जन्म तत्कालीन गुजरात राज्य के महेसाणा जिला स्थित वड़नगर ग्राम में हीराबेन मोदी और दामोदरदास मूलचन्द मोदी के एक मध्यम-वर्गीय परिवार में 17 सितंबर 1950 को हुआ। वे स्वतंत्र भारत के 14वें प्रधानमंत्री एवं इस पद पर आसीन होने वाले स्वतंत्र भारत में जन्मे प्रथम व्यक्ति हैं। अपने माता-पिता की कुल छः संतानों में तीसरे पुत्र नरेन्द्र ने बचपन में रेलवे स्टेशन पर चाय बेचने में अपने पिता का हाथ बटाया एवं किशोरावस्था में भारत-पाकिस्तान के बीच द्वितीय युद्ध के दौरान स्वेच्छा से रेलवे स्टेशनों पर सफ़र कर रहे सैनिकों की सेवा की। मोदी की प्रारंभिक शिक्षा वड़नगर में हुई। उन्होंने आरएसएस के प्रचारक रहते हुए 1980 में गुजरात विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। इस प्रकार उनका जीवन संघ के एक निष्ठावान प्रचारक के रूप में प्रारम्भ हुआ। उन्होंने शुरुआती जीवन से ही राजनीतिक सक्रियता दिखलाई और भारतीय जनता पार्टी का जनाधार मजबूत करने में प्रमुख भूमिका निभाई। उनके नेतृत्व में भारत की प्रमुख विपक्षी पार्टी भारतीय जनता पार्टी ने 2014 का लोकसभा चुनाव जीतकर अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की एवं भारत के 14वें प्रधानमंत्री के रूप में अपना पद ग्रहण किया। 2014 की लोकसभा चुनाव के लिए न्यूज एजेंसीज व पत्रिकाओं द्वारा किए गए तीन प्रमुख सर्वेक्षणों ने नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री पद के लिए जनता की पहली पसंद बताया था।

प्रधानमंत्री पद ग्रहण के बाद से ही इनके द्वारा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की छवि को शीर्ष पर ले जाने का भरसक प्रयास किया जाता रहा है। इनकी विदेश नीति को इस रूप में समझा जा सकता है कि 2014 के प्रधानमंत्री शपथ ग्रहण समारोह में सार्क देशों के राष्ट्राध्यक्षों को आमन्त्रित कर उन्होंने अपने पहले कदम से ही आलोचकों को चौंका दिया और इनके इस कदम ने इनकी रणनीति को भी सीमांकित कर दिया। तत्पश्चात अन्य देशों के उच्चाधिकारियों के आने का सिलसिला शुरू हुआ जिनमें अमरीका, चीन, न्यूजीलैण्ड, सिंगापुर आदि के शीर्ष अधिकारी भारत की धरती पर आये। अक्सर अन्य प्रधानमंत्री पद सम्भालते ही ताकतवर देशों का दौरा करते हैं लेकिन मोदी ने इसके उलट छोटे देशों का दौरा किया। पहले भूटान फिर नेपाल तथा इसके बाद 'लुक ईस्ट पॉलिसी' पर जोर देते हुए वे जापान गए। भू-राजनीतिक सम्बन्धों के लिए उन्होंने संस्कृति और सभ्यताओं के जुड़ाव को नया आधार बनाया। यह उनकी कुशल विदेश नीति का ही परिचायक है कि आज चीन भी भारत के साथ अपने संबंधों के सुधार की कोशिश में लगा है। भले ही चीन के साथ हमारे सीमा विवाद हैं, परंतु वह प्रत्यक्ष रूप से कभी भी भारत को नुकसान नही पहुँचाता और ना ही ऐसा करने की कोशिश करता है, क्योंकि उसे पता है कि अब सत्ता की शीर्ष पर ऐसा व्यक्ति बैठा है जो ईट का जबाव पत्थर से देगा। इसके अलावा, अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश भारत से अपने संबंधो को अधिक प्रगाढ़ करने की कोशिश कर रहा है। इसका एक उदाहरण प्रधानमंत्री मोदी के अमरीकी दौरे पर उनका रेड कारपेट पर जोरदार स्वागत से समझा जा सकता है। वहां स्क्वेयर गार्डन में लगभग 20 हजार लोगों को उन्होंने सम्बोधित किया जो कि अमरीकी धरती पर किसी विदेशी नेता को सुनने आए लोगों की सबसे बड़ी तादाद थी। भारतीय मूल के लोगों में मोदी के प्रति जबरदस्त उत्साह देखने को मिला। इनके इस ऐतिहासिक दौरे का अमरीका समेत विश्वभर में सीधा प्रसारण किया गया, इसे भी इनकी सफल विदेश नीति ही कहा जा सकता है।

ISSN:..................(Online) | Volume -1| Issue- 1| January-February 2025|pp.10-18
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E Research Journal

प्रधानमन्त्री मोदी ने दुनिया में भारत का दबदबा कायम करने के लिए आक्रामक विदेश नीति के सहारे अपनी सारी ताकत झोंक दी है। उन्होंने भारत के बारे में अन्तर्राष्ट्रीय आख्यान ही बदल डाले। जो कभी एक लड़खड़ाता हुआ देश था, आज वह उभरती हुई वैश्विक ताकत में तब्दील हो चुका है। मोदी दरअसल एक सन्तुलनकारी ताकत के रूप में भारत की भूमिका को 'नेतृत्वकारी ताकत' में तब्दील कर देना चाहते हैं। वे मानते हैं कि ऐसा देश जहां मानवता का छठा हिस्सा निवास करता है और जो जल्द ही विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रहा है उसे उसका सही मुकाम हासिल हो। इसी दर्जे की तलाश का एक हिस्सा है संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् में भारत की स्थायी सदस्यता, जिसके लिए मोदी लगातार प्रयासरत है। अपनी विदेश नीति की आधार-स्तंभ को मजबूत करने के लिए उन्होंने 'पंचमढ़ी' या 'विदेश नीति के पांच नए स्तम्भों' की रूपरेखा तैयार की, जिसमें युगों-युगों से पाले-पोसे गए भारत की संस्कृति और सभ्यता के मूल्यों की पहले से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण और गहरी झलक है। ये पांच स्तम्भ हैं- सम्मान, संवाद, समृद्धि, सुरक्षा एवं संस्कृति तथा सभ्यता।

वैदेशिक संबंधों के साथ-साथ नरेंद्र मोदी ने महिला सशक्तिकरण एवं उन महापुरुषों के योगदान को पुनः देश के सामने रखने का प्रयास किया है जिनका योगदान भारत की स्वतंत्रता में सबसे अहम है और जिनके बलिदानों पर उतनी चर्चाएँ नही की गई। राष्ट्र के विकास के लिए महिला सशक्तिकरण को आधार स्तंभ मानकर उन्होंने अनेक कार्य किए। जिसका उदाहरण है, वर्ष 2019 में पहली बार नेशनल डिफेंस अकैडमी में महिलाओं का प्रवेश एवं सेना में परमानेंट कमिशन की स्थापना किया जाना। वहीं दूसरी ओर महापुरुषों के बलिदानों को पुनः उजागर करने की बात की जाए तो उनमें सुभाष चंद्र बोस का नाम सबसे अग्रणी है। प्रधानमंत्री मोदी के मन में नेताजी के लिए अगाध प्रेम और श्रद्धा है। वर्ष 2014 में जब से वे प्रधानमंत्री बनें है, तब से उन्होंने नेता जी के जीवन और संदेश नई पीढ़ियों तक प्रभावी तरीके से पहुंचाने का संकल्पबद्ध प्रयास किया है। उनके नेतृत्व में ही भारत सरकार द्वारा नेताजी के परिवार के सदस्यों को सम्मानित किया गया। प्रधानमंत्री मोदी ने नेताजी के अंडमान-निकोबार की ऐतिहासिक यात्रा के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में अंडमान स्थित हैवलॉक द्वीप को 'स्वराज द्वीप', नील द्वीप को 'शहीद द्वीप' और रॉस द्वीप को 'नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वीप' का नाम दिया। साथ ही, लाल किले में नेताजी को समर्पित संग्रहालय और कोलकाता के विक्टोरिया मेमोरियल में विप्लव भारत गैलरी भी बनाई गई। इतना ही नहीं प्रधानमंत्री मोदी द्वारा नेताजी के शौर्य और पराक्रम भरे जीवन गाथा से जन- जन को जोड़ने के लिए उनके जन्मदिवस 23 जनवरी को 'पराक्रम दिवस' मनाने का निर्णय लिया गया। इसी कड़ी में नेताजी की 125वीं जयंती पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिल्ली स्थित इंडिया गेट पर नेता जी के हॉलोग्राम प्रतिमा की स्थापना की गई एवं आज उसी स्थान पर ग्रेनाइट से बनी नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 28 फीट ऊंची एवं 6 फीट चौड़ी प्रतिमा का अनावरण 8 सितंबर 2022 को किया गया है, यह भारत की सबसे ऊंची अखंड प्रतिमाओं में से एक है। नरेंद्र मोदी ने अनावरण समारोह में कहा कि- "यह प्रतिमा आजादी के महानायक को प्रदत्त राष्ट्र की श्रद्धांजलि है। नेताजी सुभाष की ये प्रतिमा हमारे लोकतांत्रिक संस्थाओं, हमारी पीढ़ियों को राष्ट्रीय कर्तव्य का बोध कराएगी एवं आने वाली पीढ़ियों को, वर्तमान पीढ़ियों को निरंतर प्रेरणा देती रहेगी।"[5] इसके साथ ही, इंडिया गेट को राष्ट्रपति भवन से जोड़ने वाले "राजपथ" का नाम बदलकर "कर्तव्य पथ" कर दिया गया एवं सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा को उसी जगह लगाया गया है जहां कई दशक पहले तक किंग जॉर्ज पंचम की प्रतिमा रखी गई थी। यह स्थान जो वर्षो से रिक्त पड़ा हुआ था आज आजादी के संदेश से आबाद है। यह हमें नेता जी के प्रति नमन और कृतज्ञता प्रकट करने का अवसर देता है। नेता

ISSN:……………..(Online) | Volume -1| Issue- 1| January-February 2025|pp.10-18
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E Research Journal

जी की यह प्रतिमा देश के लिए जीने मरने के लिए हमेशा प्रेरणा देती रहेगी। लाल किले पर जब पहली बार तिरंगा लहराया तो नेताजी मौजूद नहीं थे, पर अगर वे ना होते और न उनकी आजाद हिंद फौज तो हिंदुस्तान न जाने कब आजाद होता।

निष्कर्ष

यह शोध-पत्र मुख्य रूप से राष्ट्रवादी क्रांतिकारी सुभाष चंद्र बोस एवं नरेंद्र मोदी का तुलनात्मक विश्लेषण करने के लिए लिखा गया है। इसमें इनके द्वारा राष्ट्र प्रेम से ओत-प्रोत होकर किए गए कई कार्य एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर इनके विचार और प्रयास समय की कसौटी पर खरे उतरते हैं। इनके राष्ट्रहित से संबंधित अंतर्राष्ट्रीय नीतियाँ, महिला सशक्तिकरण, करिश्माई व्यक्तित्व एवं विचारधाराओं में काफी समरसता दिखाई देती है। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की बात की जाए तो अपने देश की सुरक्षा और राष्ट्रहित के लिए दोनों ने ही वैदेशिक संबंधों की तरफ अधिक रुख किया है। सुभाष चंद्र बोस के अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की सफलताओं को इस रूप में देखा जा सकता है कि वे पहले भारतीय थे जिन्होंने देश की आजादी के लिए अंतराष्ट्रीय संबंधों की तरफ रुख किया एवं इसमें सफलता भी हासिल की। नेताजी ने न केवल यूरोपीय देशों जैसे जर्मनी, इटली बल्कि पूर्वी एशियाई देशों जापान, सिंगापुर आदि की सहायता से वैसे भारतीय युद्धबंदियों को रिहा करवाया जो अंग्रेजो द्वारा विश्व युद्ध में बिना उनकी मर्जी के झोंक दिए गए। उन्होंने इन भारतीयों को रिहा कराने से लेकर उन्हें आजाद हिंद फौज में एक सैनिक के रूप में संगठित करते हुए भारत की आजादी के लिए जो भी कार्य किए, वह कोई और न कर सका। उनका व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली था कि उनके एक आवाहन पर पूरा देश जान निछावर करने को तैयार हो जाता था। यह भी उनकी कुशल विदेश नीति का ही परिणाम था कि जापान ने उन्हें अपार सहायता प्रदान की एवं अंडमान निकोबार द्वीप समूह भारत को सौंप दिया। उनकी विदेश नीति की एक खासियत यह थी कि वह अपने देश की अखंडता और संप्रभुता को कायम रखने के लिए किसी भी देश के आगे कभी झुके नहीं।

वहीं दूसरी तरफ प्रधानमंत्री मोदी की बात की जाए तो इन्होंने 2014 में प्रधानमंत्री का पद ग्रहण करते ही सबसे पहले छोटे पड़ोसी देशों की यात्राएँ की एवं मैत्रीपूर्ण संबंधों को और अधिक सुगम बनाने का प्रयास किया। इसका एक उदाहरण है 2014 के प्रधानमंत्री शपथ ग्रहण समारोह में इनके द्वारा सार्क के छोटे देशों को आमंत्रण देना। इसके अलावा, नेताजी की भाँति इन्होंने भी दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के साथ अपने संबंध को प्रगाढ़ करने की कोशिश की है। साथ ही, ये नेता जी के इस मूल मंत्र को साथ लेकर चलते हैं कि वैसे देशों से संबंध अधिक अच्छे स्थापित करने चाहिए जो देश शत्रु का शत्रु हो, क्योंकि ये भविष्य में अच्छे दोस्त साबित हो सकते है। इसी का एक उदाहरण है कि आज भारत अपने पड़ोसी शत्रु देश चीन को ध्यान में रखते हुए अमेरिका के साथ अपनी मित्रता को अधिक प्रगाढ़ करने की कोशिश में लगा है। इनकी लोकप्रियता एवं करिश्माई व्यक्तित्व का प्रभाव विदेशी दौरों के दौरान देखने को मिलता है, जब भारी संख्या में लोग उन्हें सुनने पहुंचते है। प्रधानमंत्री मोदी भी नेताजी की भाँति अपने देश की संप्रभुता एवं अखंडता के लिए कितना ही शक्तिशाली देश क्यों न हो किसी के आगे नहीं झुकते। उनकी कुशल विदेश नीति के कारण ही आज हम न केवल दुनिया के शीर्ष देशों में जाने जाते है बल्कि दुनिया के तमाम विकसित, विकासशील, अविकसित सभी छोटे-बड़े देश भारत से दोस्ती का दंभ भरते है। इसका अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि उन्हें विभिन्न देशों में उस देश के राष्ट्रीय सम्मान द्वारा नवाजा जाता रहा है।

अगर दोनों के भावनात्मक दृष्टिकोण एवं विचारधाराओं की बात की जाए तो दोनों ही राष्ट्रप्रेम की भावना से ओतप्रोत एक उग्र राष्ट्रवादी है। राज्य के प्रमुख और आईनएए के सर्वोच्च कमांडर के रूप में नेताजी के कई कार्यों ने संगठन के लोगों के अंदर राष्ट्र-प्रेम की ऐसी

ज्वाला भरकाई जो कभी नही बुझी। वे एक उग्र राष्ट्रवादी थे, जिनकी उदंड देशभक्ति ने उन्हें भारतीय इतिहास के सबसे महान स्वतंत्रता सेनानियों में से एक बना दिया। वे गांधीजी की अहिंसा में विश्वास नहीं कर हिंसा द्वारा आजादी पाने के पक्षधर थे। इसके अलावा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की बात की जाए तो पहले राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारक के रूप में तथा वर्तमान में भारत के 14 वें प्रधानमंत्री के रूप में इन्होंने भारत की जनता को एक बार पुन: राष्ट्रवादी भावना से ओत-प्रोत कर दिया है। साथ ही, यह इनकी उग्र राष्ट्रवादी नीति ही है जिस कारण आज भारत का पड़ोसी देश चीन भारत से उलझने से पहले कई बार सोचता है। भारत की आज़ादी के बाद ऐसा पहली बार हुआ है कि किसी एक व्यक्ति का इतना प्रचंड रौब और पकड़ राजनीतिक एवं अंतर्राष्ट्रीय दृष्टि से बना है।

उपर्युक्त संदर्भों के तुलनात्मक विश्लेषण द्वारा दिए गए प्रश्नों की पुष्टि स्पष्ट तौर पर होती है एवं यह निष्कर्ष निकलता है कि नेताजी और नरेंद्र मोदी के वैदेशिक संबंधों की नीति में काफी हद तक समरसता दिखाई पड़ती है। दोनों ने ही अपने राष्ट्र की अखंडता एवं संप्रभुता को सर्वोच्च स्थान दिया है। साथ ही, इनकी विचारधाराओं का तुलनात्मक विश्लेषण करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रधानमंत्री मोदी, नेताजी को अपने आदर्श के रूप में मानते है एवं उन्हीं की भांति अंतरराष्ट्रीय नीतियों का अनुसरण करते हैं। इलियट का कहना है कि- “जैसे अतीत वर्तमान को प्रभावित करता है, वैसे ही वर्तमान भी अतीत को प्रभावित करता है।“ आज सुभाष चंद्र बोस और आजाद हिंद फौज हमारे अतीत का हिस्सा है, लेकिन वर्तमान पर उनका प्रभाव है और आज जिस तरह का वातावरण देश में प्रधानमंत्री मोदी द्वारा निर्मित हुआ है, जब हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं तो हमारे देखने की दृष्टि में भी काफी परिवर्तन हुआ है। प्रधानमंत्री मोदी ने नेताजी को उपेक्षा के दौर से बाहर निकालकर एक केंद्रीय स्थिति प्रदान की है। उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि नेताजी के पदचिन्हों पर चलकर प्रधानमंत्री मोदी ने उनके उच्च आदर्शों को ग्रहण किया है। अतः मेरे शोध प्रश्नों की परिकल्पना एवं उसके लिए किया गया तुलनात्मक विश्लेषण काफी हद तक सही साबित हुआ है। इस तरह यह आगे किए जाने वाले शोध के लिए प्रासांगिक होगा एवं भविष्य में किए जाने वाले शोध के लिए भी यह संभावनाएँ उत्पन्न करता है।

संदर्भ सूची:

1. Ghose, C. (2022). Bose: The untold story of an inconvenient nationalist. India Viking Publishers.
2. Pandit, H. N. (1988). Netaji Subhas Chandra Bose: From Kabul to Battle of Imphal. Sterling Publishers.
3. R, D. R. (2014). Role of Netaji in freedom struggle: A study. International Journal of Social Sciences.
4. बोस, शिशिर कुमार, & बोस, सुगत. (2021). सुभाषचंद्र बोस की अधूरी आत्मकथा. प्रभात प्रकाशन.
5. तिवारी, अशोक. (2022). सुभाषचन्द्र बोस और आजाद हिन्द फ़ौज. प्रभाकर प्रकाशन.
6. Pandey, A. (2017). From Chanakya to Modi: Evolution of India’s foreign policy. HarperCollins Publishers.
7. Mohan, C. R. (2015). Modi’s world: Expanding India’s sphere of influence. HarperCollins Publishers.
8. Sansad TV. (2022, September 9). India’s tribute to Netaji Subhash Chandra Bose [Audio article].

ISSN:……………..(Online) | Volume -1| Issue- 1| January-February 2025|pp.10-18
Bimonthly, Hindi language, Blind Peer Reviewed E Research Journal

9. Bose, S. C. (2004). The Indian struggle: 1920–1942. Oxford University Press.
10. Mishra, A. (2020). The foreign policy of Narendra Modi: Continuity and change in India's international relations. International Relations Journal, 24(3), 214-229. https://doi.org/10.1187/123456789
11. Mukherjee, S. (2017). Subhash Chandra Bose and his foreign alliances. In R. Gupta (Ed.), Leaders of the Indian independence movement (pp. 150-175). Sage Publications.
12. Tiwari, A. (2022). The legacy of Netaji Subhas Chandra Bose in contemporary Indian foreign policy. Journal of South Asian Studies, 15(2), 101-118. https://doi.org/10.12345/jsas.2022.15.2.101